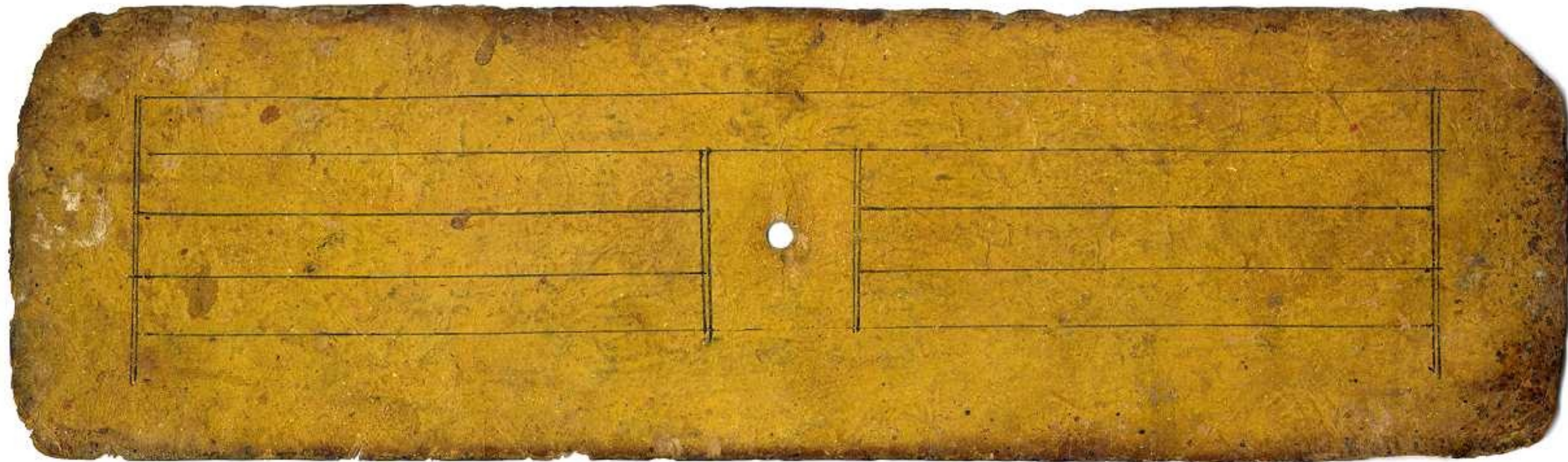




शुद्धि कवर्धकत्वा नरुसि सवेन थगना नृणां यं वा यदा नृणां लाघा यं वा दन युनि ॥ यन धिय यया ॥	वगा ४०० देव ददना वा म ज्ञानि शुं कठुं मरु
॥ स्व आयि सवे वदा वा धिमत्वा धिमः	का ॥ वं दे ॥ ददा वं रुय या ॥ दय का यनि मा स
ये शा धन वदा कृम मडा व प्रा का म या द व वं ॥	उ व द या ग को ४ ॥ उ व द शू क वं शा उ व द वा वं गः
मि स्या द या व मा धन या य ॥ उ व द वा कृ ग ज द ॥	
दा ॥ ॥ या द्या दि नि र्वा ड्ड न ॥ यन सिध वा रु गिं ला द्या दि न स्नान या य ॥ उ न म ४ स म नृ व द नां स	

म ४५

आ धि नि वि शु द्धा नां सर्वे वि प्र रु व रु दं २ रु द स्वा द ॥ ध नि य द यं जा य म न्मा व द न धि या व द या य या य वा	मु नि व य न ॥ उ व द म त्व दं वं द ॥ ध म नु न रु
२००८ ॥ यं वा यदा नृणां लाघा यं वा दन	य क दं थ प ल्यं इ ना व र ॥ ध न व रु ढा व य
धि यान या य द्वा ॥ उ व द वा वं ग द्वा शा व द न धि	का मि क म व जी रु य व यं वा द वा ॥ स्नान व द्वा
न रु न का य मि रुं र य ॥ ॥ ध न नि व	
य वा ॥ रु व ना ॥ व द रु ग म रु रु व गि लि य द य म मा य य रु ॥ अ य द न व नृ य य रु ॥ ध न नि व नि वि य वा	

नमः स्यं ह्यनानि कं वद न य विना न न ह्यनाना नृ नं र या वि का वा ॥ थन य वि वा नि न पृ जा या या ॥ डं व द	या च ऊ र्ध्व मा ॥ थन रु रु म्मा या च की रा दा
व जि की ॥ ४ ॥ थम नु न धा र १०८ जा य ॥	या ॥ थन य र क न आ र व र वृ आ र वा र क
न स सा लि क था य द क ना म र य मि र व ह	थि रा य वि धि रु मा ॥ ॥ ८ ॥ १५ ॥ ३० ॥
स मा क र वा यि स ड न या य ॥ ॥ थ वि य	
न मा थ म व ड स त रु र व ॥ क म व डी अ मा या सि दि रु र वं चा न ॥ डं व ड धु क ह ॥ थ म रु व ना ॥	

४

डं व ड उ न ह ॥ डं व ल व जि की र व ह ॥ थन क म व जि न ॥ डं दी र्धं ह द्वा कृ मि व ड य वृ म डा वि रु धि न व ड	थ व मि र्वा नां क म व डी या मि र्वा नां व ड म य
ऊ रु व र हं ॥ ४ ॥ थ गु रि म नु गु व न य र वा व	डं व ड ह वि म डि मि र्वा नी रु रु डं आ ॥ ४ ॥ ३० ॥
का र यं स य थ थ स नं मा य ड या ॥	म व वा दि वा ॥ डं व या या न ग ना म व ध मा ॥ ४ ॥
अ ४ ॥ थ म नु न म न का अ धि वा न या या	य र स या न न ॥ मा म व ध मा ॥ ४ ॥ थ रु न न या वि द्वा ॥ ४ ॥ म व ध मा ॥ ४ ॥ डं आ ॥ ४ ॥ ३० ॥
य र स या न न ॥ मा म व ध मा ॥ ४ ॥ थ रु न न या वि द्वा ॥ ४ ॥ म व ध मा ॥ ४ ॥ डं आ ॥ ४ ॥ ३० ॥	

धनदात्रं रुद्रासनं सिद्धयस्तुवाहय	डाक्षस्तुवाहय चिक्याव	रावनाय वयः । मनाहं कुं आंजीयं
काचकुं निमग्नगमनिथेनाविबवज्ज		हं वंहा सिनिवनिमं यमवाहिकायां स्वस
दिक्रुगथागमसंगुदरुनक्षयक्रुगथागम		ह्लावदवीनिचंजनधर्ममाकाव नथागमहः
दयवृहं कायादिकं सुतुवचनानिथेनानि		ह्लावदवीनिचंजनधर्ममाकाव नथागमहः
दृष्ट्वा ॥ धमनुनमदकाकास्य आवाधनयाय ॥	धगुविमं नु यवयाव ॥	उं आ ११ गधुन वज सुगुमयु

३

युयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥	उं आ १ वज सुगुमयुयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥
जसुगुमयुयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥	उं आ १ धम वज सुगुमयुयुधमहामधुलसु
गुनाय हं ॥ उं आ १ क म वज सुगुमयुयुध	महामधुलसुगुनाय हं ॥ वजाहृगमादि रुवा
रुयमानं वज सुगुनाय हं ॥ उं आ १ क म वज सुगुमयुयुध	आकवत यायादि निर्वाह न ॥ यं वायहावयुः
जा न्नायं थावाद न सुनि सनाक व ॥ धनं विज वमिखा	ख वमिखानां वधुसूय कावयं यमनां सिधया

गार्डिनं रिक्तमस्ति नंदवमागधनं विरुद्धा ॥ थनश्चागधनं ध्वययायायथादिमवेव द्वा नां रुयिभ सं	दाहना ॥ समन्वाहं वंदुमावद्वा प्रमयादिक्रम
युक्तिविना ॥ मायादद्यायथैकश्चाकद्वलियुदि	यागदं सिद्धानां मनकं याय सत्वा वेम्युनिद
सिद्धिमाहा ॥ अमवाहं महावज्रिदवमानां कल्य	मधिव्यानकुरुमहथशा अश्वममरु वंदुलं स
रुना महावज्र मधुच युवमया मिमद्वहानं	रुचिदिविगं चम अवेवका रुविद्यामिवाधिचि न कयक क कथागको क बायुनि ममाननानमसय अगाम

१

दिवसो ह्य जहामहनकव ॥ सीनियाना रुवद्वय सववद्वनिर्मनुना ॥ धार ३ यवय ॥ यायादिनि	रिहानसत्वमाशु ॥ डं वजा क्रुधादिमजा ॥ क
नां क्रुत यरियानिन युजायाया ॥ स्वहदिक्रुवायि	नजाययायमनुथा ॥ डं वज्रकुरुद ॥ धार ३ कव
कुरुवका ॥ समयत्तममयमदं रुव ॥ थनगुरु	नका ॥ गाथाधयवय ॥ समन्वाहं वंदुमावद्वा
मागाथा ॥ थनआजमानन मधुचमस्वानन	अलयादिक्रमसिद्धिमा ॥ अमवाहं महावज्रिदवमानां मधुच कल्य यागदं ॥ सिद्धानां मनकं याय सत्वा

शायः यज्जायमाचक्षीः सर्वचिकामासकृत् लाशवन्तु यालियुर्ध्वमस्तु यचमभ्वलीयचमस्वर्चः ॥ सफलिहृत्कमसद्यायर्कं ॥ ३ ॥ इह शायकः ॥ ४ ॥ जाकृत् ॥ ५ ॥	यात्रुः चिः चोक्त्वा मिहामि ॥ ६ ॥ यमिद्यायहना ॥ ७ ॥
--	---

2668

एतन्निष्ठायाः ॥ १ ॥

लुं नमाजीवकसत्वाय ॥ गनकसत्वाय कयः यज्जायाय थामसवथिनकः गंक्रसः सधुन कनसः नागायाः सर्गधनिः वलियागच्छिथुनिथायनायायः नकसः लिवायः गुनसधुल्य केगव्यस्वधमः सिधुनः समाधि ॥ १ ॥ नाननकनः लंजागनवधुनं ऊविम्ब सननिः संख्यकद्वंशीरुगः वज्रयाकालः वज्रयंजलः वज्रमलकालः विमानमधश्च	किलनलवनाः खानकया ॥ २ ॥ वज्रस्त्रिंशकालकिलमकलः द्वजव वज्रमलकालः विमानमधश्च
--	--

कलइःसदकालःविश्वकलिसमयिःरुमिविरावःगन्धधुसटिर्तिःवज्रसल्लनूया	नामावज्रकगोविन्धःवज्रसुनयः
मायनावृष्टःवैलाकुविजयायनः	द्वयननिकम्यःकुष्मानकल्याणाःनम
रैजवःकालिनायाःआलीइचनम	निखिलजःविष्णुवैद्यानिःनीलपीनः
वज्रलामविमंचयःकवचयानिवः	हरीतःसलसवागनूयावृगवकुगुयाइधुलकठःलालजिःकाःपुतिमरुवःसकुह

गालःवकवकुलःविनगुंःसमाडाललाटलःयश्चकयालःगालविनःगालदधववृथी	नाःवाद्युचमावनाःनीलानकवचयी
लसिगःषष्ठीरुषमःसमस्तुमदव	दिःनागनाजाःवृगमंठलाःवज्रवज्रध
गार्डःकलकयिलकुंगत्रःठकका	द्वयंलर्मःकनिष्ठिकाद्वयःशंखलि
माविगकनायाःवज्रमृष्टिद्वयःपृष्ट	गंगागङ्गनिद्वयःपृष्टगुलाकाविजयमदयाःखारुपुहसमायनःसवाकनायाः

कृष्णपाशः वामास्याः कथानस्वद्वाराः दधनाः गार्ज्जकं कानः मस्त्वलदि मस्त्वः स्वद्वगः गार्ज्जकं कानागुः यशुगनमिहिरिः दध दधकाधिस समययत ॥ ० ॥ यन गः यंचाधः यंचाद्यः मेशमांसः स्ना काः कृद्काः कृद्खानं चिसां यूजा विविथां वजनं चिसां जाय ॥ मरु ॥ कृधस्माथा	दिग्विद्यानाकृष्णः कृं कानस्त्रि नः धूयः नानार्जनः गंधलं स्नानः यंचास नः युकाः नकचरुनः सधययगलि काः कृद्काः कृद्खानं चिसां यूजा विविथां वजनं चिसां जाय ॥ मरु ॥ कृधस्माथा
--	---

दि ॥ यश्च यहालयूजा ॥ लाभाः द्यः सु ॥ यन किल नगायः सिदिगासी ॥ ॥ उं जसाकवादी नसबदृष्टाय द्यासरासयत्रिवागानकी ॥ यश्च ॥ १ ॥ उं विद्याककादिसर्वदृ रुठ द्यद्यद्याट्यादि ॥ २ ॥ १ ॥ यत्रिवागानकी नयहं रुठ द्यद्यद्याट्यादि ॥ यश्चिसा ॥ ३ ॥ उं यनसानककादिसर्वदृ	लयहं रुठ ॥ उं द्यद्यद्याट्यादि ॥ कानकृचनोसयत्रिवागानकी लयहं उं युहानककादिसर्वदृष्टानवगुप्तस ॥ ३ ॥ उं यनसानककादिसर्वदृ
---	---

शान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥४॥ दिसर्वइशान्नुमासयलिवानकी मि॥ ५ ॥ उं क कि ना क का दिसः लयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ सर्वइशान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ वायुवा ॥ १ ॥	लयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ सर्वइशान्नुमासयलिवानकी मि॥ ६ ॥ उं नि ल द धु को दि वायुवा ॥ १ ॥
---	---

उं स सा व ला दिसर्वइशान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ ७ ॥ उं उ षी ख च क व नि नकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ येलिं सर्वइशान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ १० ॥ थ न कि न य जा व श्या दि य जा य यो धू य दि य रु णा दि व नि द य	मादिसर्वइशान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ ८ ॥ उं ज हं रं रु मा जा दिसः नकीलयहंरुट्घघघाटश्यादि॥ ९ ॥ थ न कि न य जा व श्या दि य जा य यो धू य दि य रु णा दि व नि द य
---	---

॥ माहा निरुय ॥ मल जाग थं ॥ कलशः सर्गः मरु थारिः यूजा धूय निना ऊन ॥ यनान
द डायू जाः धूय निना ऊन ॥ मधुलसं
थन लि जाग कर्म दू न द व ल्यं लख
य दू न सा वि स र व र व ना ॥ गगानि
वा र्थः ॥ यू र्वा क क म म र्थे र ग रू व ड धा रू म धु ल नि षा ड ॥ ॥ नि ष्य न द व रा प्रु य

रुय ॥ ॥ न द न र सि ष्य न ॥ द व या दू ड न ॥ र व ना य रु य ॥ ॥ गगान र सर्व र थ ग ग
संग द नू यः सर्व वा द्वि स ल्य संग नू यः मा
ला कः या क धा दि कं द लाः यू र्वा दि य
म न रि कू रू मा ऊ र लि रि ॥ य द ग वि ग
न मि र ॥ न मा मि र ग व र्कः ॥ रू रू वं द ॥ य नि रू कू रू मा ऊ र लि ना थ द ॥ सा य रू वं ॥ ॥ थ न

खानयासनदानः स्वयसाडन ॥ रुगवान् श्री जूम्कसद्वजविशाना ऊं नमस्तुतः कठुमि
 शुभितेनार्थं युगिच्छ कनूत्तसर्कः मिः
 वत्तसर्कस्य मरुगवानः यसादक
 कसंयुगिच्छिगा ॥ मायादवायथा कस
 मर्गनार्थः सुखायुष्यादिकां मान् ॥ गृहान जूम्कस्य आयः वाधिसत्त्वयवृद्धयग्नसम

न्वादनपुमावृद्धाः ऊगदर्थकित्याथदा ॥ रुत्रसावाधिसत्त्वावः काना न्यामकदेवताः देवता
 लाकयालाश्रुः सुतासंवाधिसासिनाः ॥
 व ४ जूम्कादं माहावकीः युगिच्छाविधि
 कुयवात्रग ४ जूम्कं यामयादायः समि
 मानिष्ठी कर्तु महर्था ॥ धन ३ ॥ ॥ जूम्कमरु लंकातः सरुलंकी विनं वमसमयस

विवृद्धानां रुविशदं न समायः श्रुवेव हारु विद्यामिः वा विविरे कथं न स ॥ गथा गग कूला त्यरिः समाध्यात संभयः अग्रमदि रुवद्यु सर्ववृद्धं निमकु धातु ॥ तता द्रु ॥ वडां कूमादिः नाकुक ॥ याथादि नि ॥ यंचमयः यंचा मरुतः यंचग वाः कूसरं वः आदिसनानयस्यक ॥ उत्तमकूलं स कन सर्व यतिरुद्रुविकलानय ५६	सकयः उत्तम सकय नरुतः सनियानाः वीजानना कूमादिः कूलात्तनदवता नाजन ॥ उत्तम वंदा ॥ विंय पुवा मयस ॥ उत्तमकूलं स कन सर्व
--	--

दिगं नगस्यः वृद्धस्यः दाद्वत्रदिगस्य विवृद्धवाये एरुत्तम संगत चिलस्य विहात्मकस्य ॥ गग इलं रुवकु गयना रिष्यक ॥ थनना रिष्य यायक ॥ उत्तमकूलं सकलना वायुनय स्यः लोकययं यति दिगस्य नीलात्मकस्य दिजा गमायुन लादि ॥ थन पूयाक वरु ॥ यिवा विद्य ॥ वाधं गद ग वरु लाहा ॥ नरु विद्या	दनयाय ॥ सुसिवाय ॥ हानं लान जितस्यः धत्तम संगन कथिगस्य नियुता गत्तमकूलं रुवकु गयना रिष्यक ॥ उत्तम
---	--

ॐ आ दि वा वा स स्या स्वा हा ॥ माः आ साः उ वाः दू वाः स्वा माः उ ग म त्रू सि आ दि दा हा न य ॥ २४ य
 दि ॥ कं दा त्र उ म दा लः ग य सि ध त्रः ग म
 ॥ ग व ला च न न नि च क ॥ ॐ आः व ऊ ति
 यः मु नि ॥ व ऊं वं म म दान ॥ म ना रुः
 वः वि ऊ ना मः का यः वा कः वि ण थि य क ॥ ॐ सा उ स ॥ आः क थ सः स्र थ ॥ हूँ न ग व उ स ॥ श्री

मि श्वा नि य स ॥ ॐ क स य म स नि य ॥ र वं क स ॥ गं कृ मु सः क वा ज्ञा दिः स्वं स क रि नं सं
 ख रु स ॥ द व या क थि य क ॥ थ ग वि ऊ
 म ग म ट क ल र्वा सूर्य च नु र ना र्वा दि ग
 वि ग क न स थ यू ज्ञा या व क ॥ स्व सि वा क
 क न क ॥ थ न द व या मि श्वा सः च नु सूर्य र ज य ॥ जू जू न का या उः थ न क सि न द्रा या व नू

^{३ ३}
 नयः अंजननडा न ॥ रावनायायः मनु ॥ अज्ञानयकलं वलः ययनीकडिनरुवसाकावयन
 जनः यथा लाकस्ये मित्रं ॥ चक्र २ समं
 चिवकं ॥ ६ दिवाचक्रं ॥ ६ धर्मचक्र
न्याः मित्रा निधनं ॥ ६ पुत्राचक्रं ॥
 हानवज्रचक्रं ॥ कृत् २ ६ ३ ॥ हानवज्र अविष्टान ॥ यनसिवायकन ॥ गणः ८ निष

मांसर्वसत्वाश्च ॥ विलाकयकृयासयविम्वसावादयायायः ॥ अक सिंदनविक्रिना ॥ यनं लि जि
 यनिसमं ॥ सत्त्वकृयासयनः कृत् २ ६ ३ ॥ यनः गथअक सिंदः गथगगनस्वसं
 विशागः थर्थांजन ॥ ६ यनिकस्वसं
 सर्वदिष्टाकथागुवाभसर्वसत्वाः
 लिलसीयायजनः थ ॥ ६ युलिरुवनसं चसं विशादावविशारं ॥ निशाकागयः गस

नवयुवं मयग ॥ दनां लिखिता दवः थडासलिलसं इ विष्काक ॥ ॥ गुरु गिरि इष्टि ॥
 दानविधिः ॥ गथनः डालगगदल ॥ सः थप्रगसं नक ॥ नासियक ॥ डं जू ॥
 सर्वग थगगधृग मवूयासनरुं ॥ हूं हूं रुदृखाहा ॥ इ इ गानक ॥ डं जू ॥
 सर्वग थगगयिक्कामृग थगज्जहाहा ॥ ॥ गं थो यस्तत्र यूजा ॥ लाः धं वाद ॥
 मुक्ति ॥ वजावं मम दानः मगा क्रम ॥ ॥ निजाम कर्म विधि ॥ ॥ थनलि राव ॥

ना ॥ खद्वि जायोः दवगाः नामा कर्न विरावा ॥ यदी यार्क मित्र मृ चर गड ॥ स्य नाः सर्वा ॥
 कामयामुषत्रियरू विरवा ॥ यनना ॥ गथः खद्वि दयां नामा कर्नः मकु निष्कार्य ॥
 दवगा ददययुवं मयगः गथे वरुल ॥ दसंदन द्वादि कं कृत्वा ॥ ॥ आकव ॥
 गय्याद्यादि नित्रा ऊन ॥ डं गं जू खं ॥ हूं ॥ थमकुन ॥ यं वा मृ गः यं च गध यं ॥
 यगथः कसक नसयन ॥ सनानयाय ॥ थनं लि ॥ नसा कविकनः द्वा दल खानं हाय ॥

कसकनस ॥ मनु ॥ उं सर्वगथागत काय विहाय न कं स्वाहा ॥ यमनु नं यंच वल्कलं न ल
 यन ॥ ॥ रुनां लान ॥ यः सख्यं न लव
 तस्य ॥ विषय कस्य ॥ विलावनस्य रुवद
 निकर्तव वाय ॥ कसकनकन ॥ मनु
 यक ॥ उं आ गिलक रुष हा स्वाहा ॥ धननाम सूर्य ॥ उं आः जू मक वडा रुव गथागक रु

यधमीसकर्मवडी ॥ मडा गालनसहि
 स्वस्य ॥ विनामकस्य ॥ गनवा लं रुव युगा
 ॥ उं आ वज्र सख आः ॥ गम लावन कि

१०

रुवख ॥ दवयान् रुव उं संधि संगः वजन ॥ जाययाय ॥ दवयामनु नं ॥ यं चाय दान प्रयुजा ॥ ला
 स्याद्यं वा मनु गि ॥ ॥ ॐ गिनामक
 माय ॥ न लिखात्र आ दित ॥ समनस ॥ म्वा
 स्य ॥ यूय निगा ऊं रुव गालन ॥ यी व ड य रु
 स्य ॥ अमा य सिद्ध ॥ यन गालं हि न कनं यन मार्य सिद्ध ॥ गन रु लं रुव रु मा कि क लं ग वाय ॥ धन का

लम विधि ॥ ॥ यन ॥ रु ल या रु न
 वः य रु वान द रु ॥ द्रया ॥ खान रु रु न रु
 वन य रु ॥ सव रु या नि म रु नि नाय ॥ सहि रु

द्रव्यविषयोऽं दिव्यवासखादाऽं वाधं गइरु कवकुखादाः ॥ लाहाग्निनकाः संखलवन
 हास्यः सिधितिनिः अविद्यानयायादिग
 साद्वजदकाकयः संखनवनहायः ॥ न
 यीननखादाऽं उं खादाः ॥ ध्वनमुति
 लास्याः घं ० वादनकुति ॥ ॥ ॥ निरुलयासनविधिः ॥ ॥ यनः अर्नयासनयायः ॥ खान

११

द्रव्यमगयकः धूयनित्राईरनः ॥ लानः पंचगाथः पंचमगः पचगाथः ॥ ऊनगालं त्यादि ॥ यतयनिल
 ददिवाकासं लवकायः ॥ लाहाग्निनकाः ॥
 आः सर्वारुनधरुषाखादाः ॥ लज्जुअधि
 वलंः गकावलंददखादाऽं आः ॥ ॥ थ
 आगं रुयः ॥ यननासिचकऽं आचमनं युक्तिरुखादाः ॥ नकः मकुऽं दिव्यानसमाधिध्यान

यीषनेखादा ॥ नकमकु ॥ उंयाधायखादा ॥ चिकिधंयचिनःयात्र ॥ उंजुयानायखादाचिवां
 उंसमानायखादा ॥ दथुना ॥ उंमजाना
 ना ॥ उंदिवाधनयिनहाखादा ॥ सक
 वकनखशुय ॥ उंजुचमनंयुगिद्धखा
 चिचक ॥ ग्वयग्वावविया ॥ ॥ थनःकथखयाय ॥ चनामधिदादात्रया ॥ काइयागत्रद ॥ यथा

यखादा ॥ वावा ॥ उंवानायखादा ॥ का
 तांकायावगडायनकनक ॥ नासिचक ॥ १२
 सा ॥ थनःनखाकखानमावानः ॥ माउसः

दियजाःलाःधंःशुनि ॥ ॥ शनिजूनयामनविधि ॥ ॥ थनलिडापीतयन ॥ धजःवाऊन
 ॥ थनडयनयवाकियायाय ॥ रावना ॥ ध
 दाःसत्रकस्वंमदमिति ॥ न्यस्यसर्वदः
 ॥ थनःकाऊमानसाऊत्रयाडावान ॥ म
 ॥ सर्वसखमनाव्यायिःसर्वसखददिलि ॥ न ॥ सर्वसखयिनाचवःकासाग्यसमयागिर्मायन

वनाहृत्रदःउंससासखःमदावजहुव
 वनागथागतप्रमिरुत्रमसंकात्रयनूः
 सासखःमदागागःगिर्वंसर्वजगत्याकि

नमो ॥ इत्युक्तं कृतं नमो ॥ मातुः स्वस्ति कथाया ॥ जंजल नंद ॥ लाना नाना सुवर्ण आरुव न
 विय ॥ उंका नमय श्रीवृद्धमकूटं नि
 नमस्तु नमो ॥ यथा कंयुं ननाथये म
 जामनिमै निमसामकूटयुगीरुत्वा
 ॥ वाक्कुरु निगय ॥ उं वज्रधनस्य निशूरे विचरं ॥ यथायदा नयूजाः लास्याः च

१४

वाः सुगि ॥ ॥ नित्यं नित्यं कथय विधि ॥ ॥ थयानि अः पुगाय म ॥ लावना ॥ स्व
 इति दवगाः स्वद्वीज विज्ञानिषा ॥
 नः सुत्रसं ह नमस्तु ॥ न किं राव
 नदव अस्थि न ॥ थन ऊऊ मानदा
 नात्र दामरु मं ॥ अराधय धर्म ॥ विज्ञान वयु कीरिणा ॥ सर्वार्थं च क्रिया नित्यं क

रुवाकैसदाशुवि॥यनयनदिरावनःवृद्धलंसमयागः॥आखाविह्वयय॥थानिगु
 तियाज्जथसियावःयनदमवन्त्य॥मकु
 सधिवी॥मंडमस्वला॥डिवज्जने
 विय॥यंवायुदानयकाःलाःद्यंवाः
 मविधिः॥॥थनदभगर्नलिदावयाव॥यथादिरिमधुलंकुलाःसंयुक्तमधु

॥डंवज्जर्म॥॥कनाविय॥डंवज्ज
 जां॥डिभलदन्धाविय॥संम्वलःमिया
 मुनि॥मधुनधिरकं॥॥मिवुगादः

१५

तथिलगामथा॥डंसर्वकथगताःन्युगितादिदवताःनिखराववाधिविरुचनूयानूः
 विह्वय॥वाधिविंताहुवासर्वःवृद्धाः
 स्वकृमिषाष्टकुमानि॥निखरावन्
 गालानःवाधिविरुमिगिरुगः॥
 न॥थनलीःवाक्यका॥लाग्नाद्यंवावादनगुमि॥॥॥दियायविंदगसाःदडात्रस्ययव

शास्त्रगतामगः॥वाधिसखासदासखाः
 बालंवंःसर्वसलककात्रनं॥गथगासम
 दवर्त्तविदाविज्ञाक॥मधुलविसज्ज

नायनखयः थडाग्रथसमगयः धननदनकः लाहागिनकावजगानवा मगरुं नगाय
 सिरुतं नयः विसर्जन ॥ ॐ गिसमाव
 दतगाज्जिवाभनः दूमलक्रियाथ
 इष्टि ॥ धनमधुलथिलः कुगिनम
 ययुजाः दक्रनायुजाः ॐ हियादायनीकः किमुनिसमाः दक्रनाकायः ॥ दगुत्रिस

र्कनविधि ॥ ॥ यन्तु (अकृन्ना
 लागाः मगरुठिकाः कायदवयाः क
 गाक विसर्जनः सर्वाः सह निश्चयः वि

१३

मयः जायुगसमयः लहियकः विसर्जनः समयावजुः गमयकः कवदवस्थयः भाकसिवि
 यः वावत्रिधयमरुडा ॥ ॐ निज्जिवा
 जाचार्यलः सनानयाया ॥ समरुथाव
 लक्रीः यदयक्रितीः यिनयः कायः ज
 यः गुवूमधुलः यैके गवस्थधनः सिधुनः मधुलविसर्जनः विसमादिः सह निश्चयः ॐ सगः

मनविधि ॥ ॐ ॥ सगिकृन्नाया
 नायायः ऊरुः कुंठाः सखनः नागायः श्रीः
 यनिकायः वल्लयः थससमयः सचा

गंमकः अया ॐ यिनायः श्रीलक्ष्मीः यक्रयक्रितियूजाः धनः अग्निहोत्रः अग्निहोत्रः अग्निहोत्रः ॥ अथर्ववेदः
 काङ्गादवेयूजाः दवगाङ्गीवियः ॥ मधु
 ॥ ह्रिदियायाया खवेनो खेदचन्द्र
 मन्त्रान्निकान्नयननिष्ठायाः खेददयाद
 र्धयमवद्यासननिष्ठायाः देवकसुखे आः वजनः माउसथियक गायादि ॥ निमार्कन
 १ ह्रियाये दगसा त्रस्य धन नदन के यव गव वियः वक्र गात्र वा सत रुनः नाय ह्य न त स्य खवेनो ॥

॥ लाहानि त्रका माउस अइ वाल ग ॥ माः कंच भ माः लाह मास गः सा ह्य यः स तान यि त्र ॥ मा
सक यक थन न उ ह्य य जाः मू रु ल नः
ल मि ह न क उ सर्व ग थ ग ग का य वि ध
यः का त्र वि क न वू य क थनः पं थ व ल्क
या ऊ ह ऊ ना ध व ल मा ल सं गी ह य न्यू य यू यं दी यः वि धि ग ल ह यू जा हि लं पु कि स मं वि

मलयगीर्गः गङ्गागलंरुवंकुंयत्रमारिषकः ॥ सिंधूनयतासि वियः दिगतायाडा वियः ॥ नुला
 लतदः ॥ डिमंरुलः कुंकुमः कवूनः ॥ नयाव
 हा ॥ ॥ रिदवसु वियः ॥ डं सर्वारुल
 ०० दं गु सर्ववृक्षानां ॥ धनुकं नमस्कृतं
 यंच कूलारुवंगं ॥ डं वज्रसुखं ॥ मादकिनिगयः ॥ यिदीयायधिंदनसाः ॥ मस्वात्रगयः ॥ डं

मसलयनयाय ॥ डं आदिवंवासाः
 मरुवहासादा ॥ नानाजूरुव वियः ॥
 गसिधुय ॥ यूष्माकं यज्जमथयः मयू
 मसलयनयाय ॥ डं आदिवंवासाः

१८

आः वाउमस्वन्नदा विंजगानरुजनः सुगुणन्दिमालावलं विनीकलधरुंरुखादा ॥ मयः
 रिचकानकास्वायकः ॥ ॥ लाहागिन
 नावधनं ॥ बालसुखाननं ॥ रावना ॥ मं
 वयनं ॥ गगः स्वदरुः ॥ वीजाक्रमनाना
 गत्याः गमादाकृष्यः ॥ श्रीरुलंलीनं विचिन्तयन् ॥ यायादिः निगार्जनं ॥ यंच पहात्रयूजा ॥ लायं

का ॥ बालः कुलात्रयगः स्वनः विद्यामस
 न्यमा कवूमर्हिनः ॥ वाधिविरुखत्रयं
 लाकधनुस्सुलिलाः ॥ अकानिष्ठुवन्नः
 का ॥ बालः कुलात्रयगः स्वनः विद्यामस

वाः सुनि ॥ गदाः ऊलालयनः व्यालः लाहागसगस्यः विय ॥ **मथ** ॥ वूय नाथगन मडाः
 हाना लाकयराकरी गदी लाया निना
 नः युलायाया लमुलः गनसखनमना
 गरुचिकाः सनादसगया डे सर्ववृद्ध
 वृद्ध रुटखादा ॥ यनः मिममुलडयके ॥ **मनी** निनगाय ॥ डे वऊदा मसमय मनस्सलखा

पाणिः वृद्ध कृपु वरुणाः यनसखसख
 थः कामा लंयानियनय ॥ ० ॥ **दवया**
 वृजामनिमदा वऊा श्रीषवच्य निवृ नि
 वृद्ध रुटखादा ॥ यनः मिममुलडयके ॥ **मनी** निनगाय ॥ डे वऊदा मसमय मनस्सलखा

१९

दा ॥ **जा** मदासानगाय ॥ ऊलेममुलडायके ॥ वूमानकनसः नैअखकनसः खसिकचास्य ॥
 लाहा मृनित्रकः वऊतामचा मगदनग
 इइः मत्रथस्यः डायके ॥ **मथ** यत्रय ॥
 नी गदी लाया निना या निः वृद्ध कृपु व
 मुलः गनसखनमना थः कामा लंयानियनय ॥

यः सग्वन वियः सिदनं नूय ॥ वृद्ध रुटखादा
 वूय नाथगन मडा लाना लाकयराक
 र्णिताः यनसखसंलानः युलायाया न
 ॥ **निचा** कनः खसिवा कपडय ॥

वाक्कृत्तुन दादं व॥ थडात्र थासुगमयः व्यात्र काभायः संखत्र खरुदुत्र नय॥ विद्यनरुनै न॥
 वादानरुय॥ नूनाय कउः दवस्मः च
 माधियीनेहाखादा॥ यथावहालयु
 गुद्वविधि॥ ॥ यथावहालयु
 मंयुनिमादृष्टा॥ याथादि॥ निमादृष्टा॥ उं का क का मयखादा॥ ॥ आद्रुनि विद्याय

लकाश्रया॥ मकु॥ उं दिव्याम ध्यानसु
 जाः लाः द्यः वाः मुनि॥ ॥ नूनि या मि २०
 हावना॥ अनादिसं सिद्धिः वृद्धविंव नू
 ॥ आद्रुनि विद्याय

वायदालयु जाः लाः द्यः वाः मुनि॥ गताक्रत्र॥ नूनि अग्नि क्रिया विधि॥ ॥ पुनि स्वर
 वना॥ खरुदी क न कि न रु लिखा
 सिद्धिर्यथा ममुलं दृष्टा॥ आकर्षण
 र्मयं थावादन मुनि॥ ॥ उं आः
 मय॥ ममुल सद्विकरात्रय॥ ऊऊ मानः दा ऊत्रयं था न॥ यथैय नमय उं या॥ उं सव गथ

अकनिष्ठु वनगत्वाः नृषु अनादिसं
 याथादि॥ निमार्जन॥ यथादियुजा॥ ल
 र्ववीनरु॥ थन ममुल सखा नरु दान
 उं सव गथ

गगनयूजायस्थ नानानं निर्यागया मि॥ ॐ सर्वं गथगगवजसु त्वाश्रुधितिगुमां॥ **यद्व** ॥
 ॐ सर्वं गथगगः यूजाः युवकनायात्मा नं निर्यागया मि॥ **दक्षिण** ॥ ॐ
 सर्वं गथगगवजसु धर्मयुवकयमां॥ **यश्चि** ॥ ॐ सर्वं गथगगः यू
 जारिषकायान्मानं निर्यागया मि॥ ॐ सर्वं गथगगवजसु त्वाकिविशीमां
 ॐ सर्वं गथगगः यूजाकर्महायान्मानं निर्यागया मि॥ ॐ सर्वं गथगगवजसु कूबूषमां॥

२९

ॐ ॥ ॥ वृद्धानां मरिषककुङ्कगगयवकिर्मांशुभकत्रः यथादरुः सुथाददध्वं
 मस्यादि॥ ॥ ॐ निमगुलपुवैगवि वि॥ ॥ धनदडासर्वः रावनाया
 यगस्थद्वीजसपूषसंजानः गथग
 मायत्रिगंवृष्टाः विशाकत्रगदीरः
 ॥ यनंगलं दिगकलं यत्रसंवविर्गुः पुन्यक्रियाकत्रममार्यकनाहियूकं ॥ ॐ

ऊमहः रवावा मूनिः मय सिद्धं नमगलं रवकुं वनमारिषकः यथादिज्ञातमा पुनस्यादि ॥ ॐ वजादकारिषि मुनि ॥ यनकमिदाथयजाः झारुलक्ष नः युगिष्टायायः कनमानः यं वस्य नः काययाय ॥ यमकुन ॥ ॐ हूं ॥ ॐ वजीरवदृद गिष्टुं स्वं हूं स्वाहा ॥ ॐ ॥ १०६	ॐ हूं ॥ यं वायदात्रयकाः लाः द्यः वाः यः स्वस्तिवाक्यन ॥ ॥ यनः ज्ञानाय ॥ २२ काः स्वातमालाः न वाक्यवातः स्वतमा
--	---

रथिनहालः शुभक ॥ ऊनयं वरिमासि मं ॥ लमः नं थ कल्य शसदः सकं ॥ ॐ कल्य मरुः निक उसर्वः गुयस्वकारिः दवनाकनः लका स्वानमाननः कायास्यं विष्ठाक ॥ ॐ गी वायुः ललातादत ॥ जावन्मत्रुलिनादवाः लमः नो गी	थिं युगिष्टयुमानः याश्चुनाः लमः न ल्यमरुः दात्रदिः कल्य नायाक ॥ लक याक रुयाय ॥ वय्यानाद नानरुमः जुग्नि ऊनवायुः यिथियागं ऊः जाय कलयात्रः थिजयादः विष्ठाय ऊन
--	---

॥ सुभजनयवतसः द्रुतद्रुतया द्रुतकयनिसकत्रथित्रयादविक्रागः थल्लाल्वः द्रुतया
 लथित्रयादविक्रायमात्र ॥ यावतः
 त्रयाः लंखयिथिसुदयानिद्रुतः थत्रो
 गगनकावटः आकाशमः चद्रुमाः सु
 यकाडाविक्रागः थत्राल्वः थित्रयादविक्रायमात्र ॥ तावतल्वः विक्रयीरुगावानः सुभजनः
 यनवसः वज्रसल्वः तथगगल्वः थित्रयादविक्रागः थत्रल्वः थित्रयादविक्रायमात्र इति ॥

यथस्मादाहुरुयुगवाः ल्यादिशो डंसुयनिष्ठितवज्रखादा विक्रनधियः ॥ ॐ गिय
 निष्ठाविधिः ॥ ॥ याधिवज्रल्यादि
 नृपिनः स्तनसल्वनकीरुर्गनरुल्लः
 ॥ नृपवजादि रिनूयमानं सकलतनी
 संरुवः वज्रः गतः खल्ल वंरु नसल्वः नृपिनः यचतथागतः मध्यस्थिर्गः सकर्तः गस्य

तिः नमिसल्ललागया ह्येवयः सधियुष्टवः कथा कर्म ॥ ॥ अरिषकं मदाव
 ऊः उधायुकं नमस्कृतं यथा कंयूज
 चवद्वमदा मकूटपुगीयु स्वादा ॥
 अरिषिचकं ॥ उंसलवकी अरिषि
 धर्मवकी अरिषिचक ॥ उं कर्मवकी अरिषिचक ॥ मकूटदिवक ॥ ॥ अरिषकं

नाथयः मकूटपुगीयु कलाहुवं ॥ उंस
 मकूटनवायक ॥ उंवज धर्मवकी
 चक ॥ उं नलवकी अरिषिचक ॥ उं
 मकूटदिवक ॥ ॥ अरिषकं

२३

मदावजः उधायुकं नमस्कृतं यथा कंयूज नाथयः मकूटपुगीयु कलाहुवं ॥ उं अः वज मकूटा
 रिषिचकं सनगल्लमदं ॥ उंवज पुषा
 रिषकविधि ॥ ॥ वज ॥ उं कंयूज
 रिषकगः ॥ उंदन सर्ववद्वलं गदवज
 नथियकं वज विधि ॥ उं निवका रिषक ॥ ॥ वज ॥ उं अः वजाधियानिल्लं स रिषिचक मिती

हा ॥ उं वज मकूटा
 अः ॥ अः रिषिचक कल्लमसि वद्वः वजा
 स सिद्धय ॥ वज मः कंयूज मः उं मः थ
 ॥ वज ॥ उं अः वजाधियानिल्लं स रिषिचक मिती

मिमादिदवगायाः सद्विज्ञानं मयत्वं मयि मयत्वं ॥ उसत्वं यमिमादि तयत्वं मयत्वं मयत्वं महासुखं तयत्वं मयत्वं मयत्वं मयत्वं यत्वं ॥ ॥ यत्वादि यत्वादि ॥	॥ मयि मयत्वं मयत्वं ॥ ॥ मयत्वं मयत्वं ॥ यमिमादिदवगायाः सद्विज्ञानं मयत्वं मयत्वं महासुखं तयत्वं मयत्वं मयत्वं मयत्वं यत्वं ॥ ॥ यत्वादि यत्वादि ॥
---	--

लाइकाय वकाय सिद्धि ॥ सर्ववत्सलः सादा सिद्धिः सादे श्वर्या विदवत्सलः सर्ववत्सलः सिद्धि मयत्वं मयत्वं ॥ निदायः मयत्वं मयत्वं महासुखं तयत्वं मयत्वं मयत्वं मयत्वं रुद्धं सर्ववत्सलः वादि सत्त्वय सिद्धि ॥ स सिद्धि वत्सलः कथाः दृष्टवत्सलः मयत्वं मयत्वं	॥ मयि मयत्वं मयत्वं ॥ ॥ मयत्वं मयत्वं ॥ यमिमादिदवगायाः सद्विज्ञानं मयत्वं मयत्वं महासुखं तयत्वं मयत्वं मयत्वं मयत्वं यत्वं ॥ ॥ यत्वादि यत्वादि ॥
--	--

॥ यथिविः मिः लंखः रुमः गवनसूयवृत्तगयाजाकाः सुभनः सुभलवृत्तसः दवसुभसुधितिया
 दविष्ठाकनाम ॥ ॥ यावत्सुभलनाद
 नवद्वयः आकासमः चतुः शुद्धः दिन
 थिगयादविष्ठासाल ॥ ॥ चतुर्धा
 धीयिथिवीसः मगलः सुभनः दयाडा विष्ठाकनालः थिगियादविष्ठासाल ॥ ॥

वाः जावगाङ्गाः मदीकल ॥ यिथिसः गंग
 नाक्रिः दयकावविष्ठाकनालः थलाल ॥ ॥
 गगननक्रगावल्ः विजयीरुव ॥ गवन
 ॥ ॥

युक्तिरुक्तवर्जखादा ॥ ॥ अयाकचापिर्यादि ॥ कंशुमदसिंखादि ॥ वक्तायालाकयात्रा
 लादि ॥ ॥ यनमालसाः यिंथुथयः चय
 आगममर्लिङ्गनसाः पचरधलादाय
 त्रियुजा ॥ ॥ यनसिंथरावना ॥ नि
 मकरुनताय ॥ यंचसुगकाऊनकः विदिइयः ऊकाकूतियायः सुदनलेय ॥ मधु

कनरुय ॥ यनदगावलिवियः ॥
 क ॥ धावकइजसुमाला ॥ ॥ दूक्ता
 नाऊनः लादागिनक्राः वडः गात्रवा

लथिलः कृष्णवर्तिनः यूर्ध्वदूतिः आभिवादनः सखनतयः दक्षन्मयजाः कलम्भः
 लिखकः कृष्णालियजाश्चयः दग्धुः समयः कृष्णालियजायाः आदिः सः
 यूर्ध्वकंठः लदितक ॥ समयाचकः हास्वादूतिः विश्वर्जनः यिनायलि
 नः यदूः यकीनीः श्रीलक्ष्मीज्ञायः क नसः मधुयानाज्ञायः वालिश्चयः
 गद्यचक्रः धर्मागमिः हास्ववलिः भाकसिद्धिः ॥ ॐ निदहाकृयायुनिष्ठाविधानम

२६
 ४
 ४

2668

सा न युक्तवन्मया वा ॥ कवना ॥ कनानियन्नदवका धर्म सत्तावद सत्तावद कानवान् शयेवधोक्त कभयेस्व
गदवदध्याउसले लोविश्या ॥ यमिशा वा रया मि ॥ ॥ धनचिदावका निस्य दधव
जिवासायकया ॥

2668

ASIAN ARCHIVES

मुकस्याथोयवाशिविचिरेयवृद्धयन्तुसमंत्वादनंमुमांवृद्धोङ्गचक्रकियाथेदाशरुलगावाधिसत्वाथयाचाग्र
 मकुदवमादेवतालाकयालाधरुकार्वाधि
 चक्रयःशुभकादंमांदावडायकिष्टाविधिसंयुगा
 यामयादायसचिष्टास्यंचनमःशासवेस्यायकि
 सरुलंक्रमःशुभमसरुलंदिविर्गचमासमयसर्ववृद्धोनां
 मांमिंशागागनागिलगाशासत्वायकश्चिन्व
 शाकविष्टामिङ्गाचुद्धयेथागकुयचालनशुभकं
 ध्यायांसा निश्चिद्धुंमदर्थेशायावश्यउयाशुभम
 रविगादनसंशयशाशुवेवकुरुविष्टामिवाधिवि

कुरुचक्रमःशाकथागाककुलात्यकिममायस्यांनसंशयशाशुभामदिवमद्वययक्षमस्तदनकेलशागनियाना
 यमस्तगःशवेवृद्धनिर्मणनाकाहूनदवतांवडा
 दवडवकसाययायंवाभृकयंचगवायंचगेचेरु
 साहूलैसाकलसत्वादिककलस्याःवृद्धस्यादावचदी
 गनंमचरासचयुडिकस्यानिवात्मकस्याधर्मस्याभिनकाथिरुमनिचुक्रवस्याःलाकपयंयविंवितात्मकस्याकला
 विदि

नसाभिवेदयवर्गस्य

॥ स्वादाँ स्वस्ति वाक् यज्य ॥

[illegible]

ग्वय सिध सिधू या नूकय दक
लाकय

विथका ज्ञाः माउडा ॥ कंः कृ ॥ आः कया लडा ॥ कंः नुवाउडा ॥ दिः शमिवाडा ॥ कंः कृ ॥ ग्याडा ॥ उवडा ॥	विडा ॥ लः अथिस्म ॥ न ॥ चैयकवडा ॥ थयडा ॥
॥ गंः गालयाक ॥ कंः शककन ॥ नाकिडा ॥ थकि ॥	याडाः ॥ वयाडा ॥ नकान ॥ अउचनवडा ॥ अरुनवडा ॥
॥ ददयामिडा ॥ वडमडा ॥ गावय ॥ अउचयवडा ॥	नितीडिनेकडा ॥ आकावेय ॥ वाडमुः ॥ यथा ॥ लाव ॥
॥ हिमाक ॥ गावया ॥ ॥ अरुनीयक ॥ लवडा ॥ अउ ॥	॥ सिमिवा ॥ ज्ञाः ॥ चक ॥ २ ॥ समक ॥ च ॥ वि ॥ ध ॥ ध ॥ न ॥ खा ॥ दा ॥ दि ॥ सि ॥ क ॥ न ॥ क ॥ ॥ वा ॥ दि ॥ य ॥ च ॥ दा ॥ य ॥ कंः ॥ ॥ अ ॥ व ॥ स ॥ व ॥ म ॥ क ॥ न ॥ क ॥ न ॥

॥ श्री धर्मोचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री कनकनमिच्छानिर्वाण्यचक्रवर्णनं ॥ श्री वज्रचक्रवर्णनं ॥
 धियकं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 सर्वसत्त्वविता ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 मालदी ॥ सर्वदिगलोकभाण्डादिशुचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 या ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥

कथागतधर्ममध्यामनकं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 जाम्बवतमदा ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 वता ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 दक्षिणा ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 दक्षय ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥

श्रु कललनं वा क्रुशकधसः स्नान ॥ धननीनमाकचिकनकायावः द्वा ल स्नाननदाया मरु ॥ न्नां सवनेया गक कायाविष्ठा धनः स्वाहा ॥ धनचिर्यं ययत्वा मडाग (धन) सहितस्य द्वियकस्या विवाचनस्य रुव गदयया क्रुशकनक (ध) ॥ न्नां वडस त्व आ शास्त्र चकउवनः स्वाहा ॥ न्नां अभक वडा रुव कथागत रुव द्वा ॥ नाम मरु या मरु उध धिस्त्री दवया ॥ मरु ॥ जायक	लनः स्नान ॥ यः स त्व वल वर धमस कम वडी इह वविना धकस्या कम मरु लं गव रुः ॥ न्नां किवाचं वाचनचिकन ॥ नचका मंण ॥ न्नां आवडनिय नाम मरु या मरु उध धिस्त्री दवया ॥ मरु ॥ जायक
---	---

या मरु दव दगुली मरु ॥ यः ला श्य मरु नि ॥ रु निना माक वध वृधिः ॥ ॥ धनलिकरु विवचानाय नि क्रुशयकवाय मरु ॥ धनली क्रुशकक्रिया ॥ माधु सहितस्यः अभयसिद्धिः ॥ रु ल मरु ली दि कवाय रु ॥ क्रुशक रु ॥ न्नां दिवा वा धमः स्वाहा रुध काया ॥ ॥ धनलीः नाना सिद्धाद काय रुध काना ॥ मरु वधु या वस दिग कासी रु डान कथा ॥ न्नां यास	स्नाना ॥ धी वड वर वर य दस वड या धिस मरु ककर य वमा ये सिद्धिः ॥ रु ल मरु लं गव रुः ॥ न्नां किं न्नां वा धी ग इह कव व रु ॥ स्वाहा ॥ ना व वा मरु मरु वधु या वस दिग कासी रु डान कथा ॥ न्नां यास
---	---

सूच्य २ द्वा

मिदालि

३ मन्यासन

विमंलाधनी द्वैरुटा ॥ चयनदाय ॥ आगहनश्या ॥ नका ॥ ज्ञा ॥ आ ॥ समाधि ॥ लसर्वजीवयुषयिषुनर्गुहखा
दा ॥ ममनस्य ॥ बुद्धनडागुलीनका ॥ ज्ञा ॥ ऊ ॥ स्वा ॥
नयागधवृषि ॥ ॥ धनलि ॥ खाना ॥ क्रयाया
नताया ॥ नाना ॥ रुच ॥ झलाका ॥ वविया ॥ ज्ञा ॥ सवो ॥
स ॥ बुद्धे ॥ धनयावः ॥ साडा ॥ दिगमाया ॥ नदा ॥ दा ॥ च ॥ ज्ञा ॥ नम ॥ सम ॥ रु ॥ बुद्धे ॥ नी ॥ डा ॥ दा ॥ व ॥ र ॥ द ॥ द ॥ स्वा ॥ दा ॥ ज्ञा ॥ आ ॥ क ॥

गङ्गाधारा यलय ॥ साडा ॥ अधिष्ठान ॥ आगहनश्या ॥ नका ॥ ज्ञा ॥ दि ॥ आ ॥ न ॥ समाधि ॥ ध्यान ॥ यिषु ॥ न ॥ स्वा ॥ दा ॥ दा ॥ गु ॥ बी ॥ व ॥ वि ॥
ई ॥ नका ॥ दा ॥ या ॥ र्वा ॥ ना ॥ सि ॥ च ॥ का ॥ उ ॥ र्थ ॥ ना ॥ का ॥ यु ॥ क ॥
य ॥ न्वा ॥ न ॥ व ॥ य ॥ ध ॥ न ॥ रु ॥ ध ॥ या ॥ य ॥ आ ॥ रु ॥ र्वा ॥ बी ॥ य ॥
सु ॥ कि ॥ गु ॥ कि ॥ अ ॥ न ॥ या ॥ स ॥ न ॥ वृ ॥ षि ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥
उ ॥ था ॥ य ॥ र्वा ॥ क ॥ या ॥ रा ॥ त ॥ ना ॥ ज्ञा ॥ म ॥ दा ॥ स ॥ र ॥ व ॥ ज ॥ ऊ ॥ रु ॥ र्वा ॥ दा ॥ शा ॥ रु ॥ च ॥ रु ॥ स्त्री ॥ म ॥ र्वा ॥ गु ॥ कि ॥ स ॥ व ॥ क ॥ था ॥ रा ॥ क ॥ ल ॥ ग्नि ॥ रु ॥ ल

लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥ **ऊज्ज्वलमानः हाथः हाडः लयः यकः कथः ॥** मुद्रासंघः मद्रासंघः शिवसंघः कालिकासंघः
 सत्त्वमनोवायी सत्त्वमनोवादी सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥
 मनार्थः कामास्त्वयि विद्युत्तयत् ॥ यमप्राकृतविधिः ॥ यमप्राकृतविधिः ॥ यमप्राकृतविधिः ॥
 ॥ कृत्तुर्धर्मसिद्धयत् ॥ धनविमोक्षात्तयत् ॥ धनविमोक्षात्तयत् ॥ धनविमोक्षात्तयत् ॥
 ॥ मधुलविचकः स्वानमानः ॥ विमोक्षात्तयत् ॥ विमोक्षात्तयत् ॥ विमोक्षात्तयत् ॥

२ किं हा न कं

॥ धनवागीश्वर ॥ ॥ गतं च उक्तं नार्थः ॥ धनमादिगन्तव्यं कथं ॥ ॥ धनवान् ॥ ॥ लक्ष्मीलंका
 मलयादिः सत्त्वमनोवादी सत्त्वमनोवादी सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥
 ॥ लक्ष्मीलंका ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥
 ॥ लक्ष्मीलंका ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥
 ॥ लक्ष्मीलंका ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥ सत्त्वमनोवादी ॥

ग ॥ कृष्णयन लूमन ॥ ॥ डं तत धर्मो नाथै द्युधिकन हाखाहा एम वल्क सुचिकया कल्क
 देन ॥ यनस्तान ॥ यत्तमल अशिमस्य डि ॥ होयुननमक पुनाच वव हाससु साधिन
 पथीव तमकु वडिनस्य निम्यविगल गल ॥ मल राहु रयन मा अशिकक ॥ धनलो ६
 हाअनि ननोजन ॥ ॥ किकमनन द्या ॥ वलि लिखित्वा कृत अना सुवल्क निवका ६
 दिनाना राज हो ॥ ॥ रुलेक कुमन ४ मा उज नचा जय लूचिनन रचक ॥ नाना वविथ ४ ॥ ६
 न

॥ डं रावो रन रुयन स्वाहा ॥ दया ॥ डं कालनय क वद्धमलित मकट निथाय ॥ ॥ ६० दीग सव व
 दाना ॥ यो धा पुन मकृ र यमा रं यून ना थो ॥ य मटय अ क ला रु व ॥ डं सव वद्ध च जामहि
 महामक टयु गिह स्वाहा ॥ डं वरुन तणी ॥ ॥ मकट शिवा आवाय ॥ मकटन यायक ॥ वज
 आतपनी मूदा वद्वा ॥ चाक रुही गय ॥ वज ॥ धन श्वनी हूं ॥ ॥ तत ४ यू द्या दिय डा ६
 यष्टा वादन सुति ॥ ॥ ०० ति च उा क न हा विधि ४ ॥ ॥ धनी लिवा वान क्रिया ॥ गता वगु दडा ॥ राव

ना । ॥ गताः स्वर्गदिदवता स्वर्गद्विजचिकैर्ज्ञानिषादयः सद्योकाः ॥ १ ॥	॥ देवजसत्त्वर्त्त ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमः ॥ लक्ष्मीदेवतां कृत्वा नमो सावमागतं	॥ कवयटाः शलिवहा ॥ ऊजा मानदाथः
ज्ञादवचिकयत् ॥ ॥ धर्मकुनदवता अधिष्ठा	॥ लक्ष्मी ॥ अशावयुत्तधर्मवचिक्री सावयुक्किरी
जायमान ॥ ॐ दर्शय सर्ववद्वोनी हृत्ताकव	
नी सत्वाथ कियानिर्णयं कुरु वसदायु वि ॥ यनयनदि ॥ नमो नवद्वर्त्तसमयागत ॥ ॥ गुर्याविरुपयय	

॥ धनिगुडिया अर्थसयाव प्रदक्षवर्त्त ॥	॥ देवजधर्मजी ॥ अन्ननमकुनस्तिर्गं वृक्षगुरुं कलुदय
॥ धर्मकुनज्ञानाविय ॥ ॥ देवजासन्निव ॥	॥ मूजवर्त्त ॥ ॥ वासिममल्लावध ॥ ॥ देवजवर्त्त
॥ ॥ किंशुकदलुदरु दद्यात् ॥ दर्शोदा ॥ ॥	॥ शलिवर्त्ति ॥ ॥ अत्रिकाय ॥ ॥ य ॥ ॥ अयदावयुजा
॥ यत्पावादनमुनि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥	॥ वृषि ॥ ॥ लिहावयाव ॥ ॥ ज्ञानयाय ॥ ॥ यथादिने
॥ मधुलककृत्वासीय ॥ ॥ ॥ देवजधर्मजी ॥ ॥ गता नयुनिदि कश्चिनि ॥ ॥ स्वराववाधिविरु ॥ ॥ वृत्तानविरु	

यय ॥ वाधिविरुद्धा, सर्ववर्द्धयुक्ता गणमाणा ॥ वाधिसत्त्वा मरुतसत्त्वाः ॥ स्वजागिष्याश्च जमिनः निख	मासमल्लन, वाधिविरु मिमिषु न ॥ नतावाक
सार्व, निलावर्ध, सर्वसत्त्व ककानर्हाः ॥ नथ	हाममावरुनविधि ॥ ॥ ततः सर्वदेवताधिः १०
यजा, लाह्यादिभिः सयुक्ता ॥ ॥ वरुमाक	॥ स्नानतर्जनः ॥ समस्तमय ॥ गुर्वदकनायुजा, आस
वागनविधि ॥ ॥ धनः ॥ सतर्जदका काय	॥ अथ यन, अहनि यय
वाउ ॥ ॥ ०० ति द्रष्टव्यविधि ॥ ॥ सति कृ	॥ यही विधान इति ॥ ॥ अथ यन, अहनि यय

२ स ७ ल. थि २

२ स नान

यकावसमय, कृत्ताना, सवायकन (हायत) आचार्य ॥ रावित, समाधितय ॥ सूचनायायति मादि	॥ यमनस सयहार्च, आचार्यस्य ॥ ०० नाय
धुचिधि ॥ ० सस्य ॥ रावना ॥ कालय ॥	कलसयुजा ॥ अग्निथायन ॥ क० न ॥ दवता
अलिनीकायकन ॥ गुर्वमलुलदगुची	खददय, चन्द्र ॥ ०० कालीविशा ॥
धनहाव ॥ ०० दिधिया ॥ रावना ॥ तता ॥	यतिमादिदवता मडासिकै नकायहा निध्या ॥ खददया, इलु ॥ ०० यतिमादिदता, वामया (य) यमच

वे १

१ गुह्य

३ कमिलुथयजा

दासननिषय ॥ डं वरुस त्व आ ॥ ॐ निमकुनननस्यामुद्धि वरुस त्वसमयमूदावदा ॥ भा उडा ॥		हामिल लदा एययथक मालया युनिष्ठदवता
वरुनथियक ॥ याद्यादि एनिला ३३ न एला		॥ मासकवक लाहामास ॥ मवभूचुल (हान ११
गीवसमात्रा ॥ अइयावयन ॥ मासमदन		॥ लशियाचक ॥ तत ४ डंसर्वतथागतकाय ३
श्वानयनय ॥ ततसमालानयनयन ॥ ३		॥ लशियाचक ॥ तत ४ डंसर्वतथागतकाय ३
विश्वधनखाहा ॥ ॥ ॐ खननसफ डकनू सगधनयन दूवाक लुनदयन मययित्वा ३		

२ अलत्रसामत्रभात्रक यक

॥ म ३ वरुलन विनूदय ३ वीथिस्ति ॥ यथाभूतनय ३ गधादिना ३ खानेकालय ३ ॥ ३		कात्रनवायका य ३ वकन य ३ मृनय ३
॥ ख ३ य ३ मयुधाचन ३ सधाय य ३ य ३ ३		माल सगीकनृय य ३ य ३ वनदीय विवि
३ ग ३ ॥ धत ॥ खान ॥ डद ३ लासावन		यीके ३ म ३ ल ३ व ३ न ३ य ३ व ३ मा ३ य ३ क ३
३ ग ३ ३ य ३ डा ३ शि ३ य ३ ति ३ स ३ म ३ वि ३ म ३ ल ३ य ३		॥ लयनयाय ३ ३ ३ ३ ॥ दवांग ३ ३
॥ य ३ ३ ल ३ वी ३ ड ३ डि ३ त ३ ख ३ न ३ ड ३ ड ३ म ३ क ३ य ३ ३ ॥ ध ३ ति ३ नि ३ या ३ ड ३ ॥		

४१ शतमिह कस द्याय

३ भाद वि निगय २ कु २ जिंधि द्याय

पवसु पाडं दिष्टि वास (ह) खादा पा वक्राय पाडं मद्यमिन रु य (ह) खादा पा नाना अमन नवि	
य पा ०० दन सवे वदानी कुभा पु क न म क	मी य म्मा क यजना थय म क ह य क कला
रवि पाडं वज्र स त द्वा पा रु छि नी न च च क	पा अनन म कु न पा गत ४ डै अ म्मा ४ वा द श स
व द्वा पिं गान न वृ अ न म्म वं ग छि माल व	व वि नि ष क थ द्वा रु द्वा दा पा शत मि तु
कान का द्या य क पा ला द मि श नि वा अ न ४ म रु हा वृ य	पा गत ४ शी रु ल यजा क श स लु पि
मा था पा अडा व व न गु र्धे व यी न का घृ म उ न रु थ ४ मी रा ड न म क गी यं नी ना जा रु ४ अ आ ता ४ थ मि श	

३

पा वा व चि र्य पा रा व ना पा शु न्य ना क वृ द्वा कि न वा धि चि रं स्व वृ यं रा व चि द्वा पा गत ४ ख द्वा द य रु	
वी जा रु व ना ना लो क भा र्गु म्म लि त्वा अ	क नि ष रु व नी ग त्वा म्मा दा क व ४ शी रु लि ना
अ त य म पा या द्या दि पा नि वा अ न यं वा य दा	व यु जा पा गु मि पा गता रु रु ४ शी रु ल द्वा श
य श न यी ति नि ४ ला द ग श न वा ४ मि र व ल	द्या व ज न ल क था उ चि र्य स्व उ धि था न न च
य ४ ०० दं गा था ग मि मू डा रु न लो क म्मा क लि गृ ही त्वा या हि नी या नि वृ द्वा क य वृ ह ता य न	

सखन सखन यदुयायासु लं एतनसखनमनार्थ ४ कामाख्य यविधुनयत् पं सखवद्वचुज
 मनि वडासुयवले निष्ठ २६ हृदवादा ४
 सखखादा एहासुनताय ४ एतना ४ अग्नि
 तयता यम २ निनि एधनमम सुलदाय ४
 ज्ञान कानन एखसि कन्नस्य एदवयाशवा वाधकाविन कनकक एक्रमन दायक एतात्रचामन ४

एअलिनीनताय एडे महासमय मनू ४
 क्रियायुद क्रिष्णकाल ऊलदिन धावाया १३
 क एदेले २२ अत्र यय एनेशय कानस ४

३ दिव तद्धन

हृदाशा अग्निनीनताय एयडा एखसि वाक्क यउय दाय एनचाक ए एरुयताभागतिमडा
 दि एखसि वाक एअधनिष्ठीह यान का
 ऊवदावखसानस एवाधावन कुर्य एसक
 नसमाधिध्यानयिनुनखादा एचलजाद्यः
 एयचायदाययुजा एवाग्नायन्मवादन सुनि एरुहियाय एयाहिगहनविधि ४ ए

ताय एमत्रावकाकायाव थदाथाशन एयाः
 शाजन काजा एचलजाद्यय ए एडेदिश
 यमकु एयुद्यादिनामयूक मुनि ४ कुर्यत ४

पथनः अग्निप्रिया सावना पञ्चनादि संहि सिद्ध विद्यमिवयमि मां दृष्ट्वा याथादि पञ्चनादुगे
 यूष्म पडं यादका निर्यं स्वाहा पयश्चायदा
 निप्रिया विधि प एकमिदका स मनुया
 पगताः स्रद्धादि कै हं कावसावर्जं गच्छि वनं
 पुनादि संहि यथा मनु लं दृष्ट्वा पञ्चकार्थेन याथादि निराश्रितं यथादि पडं स्वदीवहं प

यूजा अष्टालाष्टा ४३ मा दन ४० ०० निष्प
 दाव पयमिष्टयाय ४ यमिष्टयावना प १४
 रुलित्वा अकनिष्ठ रुवर्णागत्वा ४ गगसु
 निराश्रितं यथादि पडं स्वदीवहं प

पमलुल सद्रुतयं शात्रय प कत्रयूना अलिव द्वा पञ्चमान हाथडात्रयं चान पयश्चयना मया
 य प पडं सर्वतथागत यूजाय सु ना
 कसत्वाय शिष्टि गमां प पडं सर्ववृ
 सर्वतथागत वज्रवेला चना शिष्टि गमां प
 न निश्चो गयामि पडं सर्वतथागत वज्रवेला शिष्टि गमां प पडं सर्वतथागत यूजाय वरुन

यात्मानं निश्चो गयामि पडं सर्वतथागत व
 द्वयूजाय सु नायात्मानं निश्चो गयामि पडं
 पडं सर्वतथागत यूजाय शिव कायात्मा
 पडं सर्वतथागत यूजाय वरुन

॥ इन्द्रं न सर्ववृद्धं ह्यंगुलं वरुणं सुसिद्धय ॥ इन्द्रं कथं विवस्मि यद्वृद्धं ददामि ॥ वरुणं नूनां कंठं मा उज्ज्वलं शिथिलं ॥ वरुणा शिथिलं ॥ ३ ॥	इन्द्रं वरुणा धियति स्त्रीं मरुति विष्णुं अमि तिष्ठत मया जगद्वत् मरुतिं सीनिहीतां सव ॥ यथा ॥ १०
इन्द्रं मयस्त्रीं इन्द्रं वरुणं यद्वत् अंगुलिं हितमि शिकं धे ॥ ४ ॥ इन्द्रं वरुणं सत्वस्त्रा मरुतिः	विष्णुं अमि वरुणं नामा शिथिलं कट ॥ यद्वत् वरुणं
वरुणं दवया नाम कथं ॥ इन्द्रं अंगुलिं मूकं रुथा गतं स्त्रीं रुहं वरुणं ॥ नामा शिथिलं ॥ ५ ॥ युति	

२ वंथ न द अया नूनां कथं कयात्रः शिथिलं अः स्व अ नं अ न कं

आदिगणया चकं

मादिवत्ता सर्ववृद्धं यद्वत् कवकं न ह्यनमूला लिङ्गिना किनयां विशाच ॥ मत्तं मयुतिष्ठि तव वरु यस्वाहा ॥ आचार्य शिथिलं ॥ ॥ गदनं च	कथं वरुणं किं लि वरुणं सत्व ॥ स्वद्विज किं
वनानिर्गम विचरं चनादि ॥ मथागतं	वृद्धं विचरं न ह्यनमय विष्णुं उ विरुणं म
हासं मन्त्रं यथा वरुणं यथा ॥ मरुतं	वाधि विरुणं यथा युति मादि दवना या मय
यविमं किं चिन्मयं ॥ गङ्गा शिथिलं ॥ ॥ मत्तं मयुतिष्ठि तव वरुणं सत्व ॥ नायनि तद्वत् ॥ समायनाय	

यतिमादिदवगाथा, सहजानन्दमयत्वं मधियुक्तं पायुह्यहनाशिवक ॥ एतदनन्तव
 कुरु गायत्रियादिन, चक्रार्थसकलवृत्त्या ॥
 महामयमयः शून्यानाकवृत्त्या कलशम
 यथादियुक्तानुति ॥ वक्रः शिववद्वा ॥ यः
 दनादिनिधनः यवः महामयसत्त्वा, वक्रः सत्त्वायसिद्धाय ॥ सर्वोक्तममम, महामिद्धि ॥

यतिमादिदवगाथादिनसत्त्वायनायवम
 धिमयुक्तं पायुह्यहनाशिवक ॥ १८
 मृधास्ययदय ॥ आकाशायादचिन्तत्वा

महेश्वर्याधिदवगा, सर्ववृत्तांधवावाजासिद्धमयवमाद्वनशनिदायगाखनश्रासि, सर्वत्रागा
 नूत्रागानशतत्वनसिद्धमरुगावानमदा
 दिमृक्तसुथागतः समन्तुदसर्वोत्मावा
 हेश्वर्यादिमूढयाः सिद्धिवक्रमहाक
 सर्वसत्त्वददिरि, तः सर्वसत्त्वयिता ॥ श्ववक्रामाणसमयापिष्ठा ॥ यनसत्त्वनसंस्तुनयह्यया

त्राणमहान्नतः श्रुतकशुद्धसर्वोय, आ
 धिसत्त्वयसिद्धमपासर्वोक्तममहामिद्धि, मा
 योद्धुगतायतमम ॥ सर्वसत्त्वमनायायि

यायात्ममलुली ननसखनमनार्थ कामाह्वयनियत्रयक गय (अथयहावयूडासुति पाज
 ऊमानं पूजायाचकं ऊथासद्धादक
 ३॥ थितहाव ॥ कमि ऊऊमान गुनूय
 यकीक ४ मूखतनयास्य थितहाव ॥ ॥ ॥
 को ॥ वद रुदवता सर्वदुग्नि ऊववायूव हायाव तमू थितादव हायाव तमं ४ मदिगव ॥ ॥
 ३॥ तिस्व रुते ४ यता यरुय

१०

चन्दाकागगहाचया यावलावती विजयिगव ॥ ॥ थया अथकन एव कल्य गुमत्रु सदासर्व
 दाकालं विज्ञायमान ॥ नद रुदवतासर्व
 यु यथिथि आकाश ॥ थयच रुतमान वद
 लं थितयादं विज्ञाकता ४ थिथि विमह
 विज्ञादाव दिन त्राणी दयकं विज्ञाताल ॥ थियं विज्ञाक थरुन ॥ ॥
 ॥ अयाय चयादि ४ वद

धनमात्रसाधि

कुदवमा सर्वकृन्धं यमि मां क्वचिन्कृन् दानयनं ४५ भागि यूर्ध्वं स्वस्ति ५३ सर्वगत व कुम्भं ॥ धनं दंशव विविधं मानसा यश्च प्राचा क मान ॥ ॥ अङ्ग मल रुक्मा ॥ अङ्ग चोदं ३५ सन ॥ डाङ्काग्नि आङ्ग निविध ॥ मङ्गुल माङ्गव ॥ सयनन ॥ ददनायुजा ॥ कृष्णसिधक ॥ अङ्ग सवाद ॥ सवाद कृति ॥ दंश बलि द्वाय ॥ क्ले	हायक ४ अङ्ग मदव रुक्मा ॥ आनीयात दय ॥ ॥ अथ नि कुमात्रीय डा ॥ शिष्टाधिवा थवक ४ खानगनक ॥ अङ्ग कृति यय ॥ श
---	--

मृगशिरः

॥ जिवथागहनसा ॥ कुमानीसमयश्रुद्धा ॥ क्लेशनाथ ॥ विमलनयाचकः ॥ यहुध्वयमनवः ॥
॥ ॐ निदशक्रियाविधिप्रभाय ॥ ३ ॥

हृदं न मा वृद्धाय शास्त्रं कंशीया संग्रहं धनं ॥ ८० ॥ दानि निहाय यतिस्तु न शास्त्रं निश्चयं न विहारं ॥ यय
 कर्म कृत्वा शुभं नाम न अशिक्षा दवादिना
 यां यय विजयवलि किनी विविकानि च न
 चमूय कान काय लसया उचिया वयाय ॥ व
 दाहल रुग्णं यय धूमि कागं विया रुग्णाय यय चमूयका कुमाजी गूयका धूमि न दुयक यायाद

॥ धनगृह सावना ॥ गुरु १६ स्वरावहृदा मवेधमा १४ स्वरावहृदा १॥ आकाशा यत्र मच्चिराद्य १॥ यं
 कालहावायु मलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥
 नमः स्वरावहृदा मवेधमा १४ स्वरावहृदा १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥
 ॥ गुरुयत्रिहं कायहा विम्ववजमयिगुमिह
 कायाविम्विहं वेलाचननूयात्यविम्वमन कूटाकायं विम्व ॥ ॥ धन किं नाराय ॥ मरु ॥ १॥

२२

॥ ६ घघ घाटय १ सवदुस्मान् ६ १ रुट ॥ ६ कीलय १ सवयायान ६ ६ रुट ॥ ६ वजमनल
 ६ वरु किलय वरुधनप्राह १ ययति १
 ॥ धनधूययाय ॥ निनाअन वरुतान
 द्वावराधूययावचियाव ताया ॥ शुद्ध
 कामनं नय ॥ य १३ मश्री यं वामुन १४ कूटाकायं विम्व ॥ ६ रुट ॥ ६ वजमनल
 वावयदाव मासकवक साधय ॥ शुद्ध
 कामनं नय ॥ य १३ मश्री यं वामुन १४ कूटाकायं विम्व ॥ ६ रुट ॥ ६ वजमनल

[illegible]

रथ नष्टे दानया ॥ क ॥ गुरु धन ॥ गुरु सिसु मांस दसुखा गम्य विला कयः
कृया मय ॥ हय मय ॥ गुरु नवा मय ॥ हयि डं यरु निन मिथ्य सुत्रय
समस्त सत्यया ॥ मिथ्य कः कनू नामय ॥ नदया डानु न मास्यं या दने ॥
विहय सालादया सुदुग ॥ क सिदुन ॥ विक्रिना ॥ विस्व सालाया ना जाया
नग थ्य सा क सिदुग थोग गनं कनू नामय नसात्र थ थं मिथ्य या के यद्वं हयि न व

नृणां वगः सास्यं विज्ञाद न ॥ ॥ त्वार्यं विनिगनः तस्मिन् न हि सुसद्वादिगत्वा
 कथं गुह्यं न ॥ द्रुयस्य ध्वनं रुनया
 गद्यं तस्मिन् यागं न ॥ दिदिगः ॥ यद्व
 यूँ हानं अर्द्धं ॥ रुनया न या
 सिधया के कनूसादृष्टिं न याडासास्यं विज्ञायमात्र ॥ ॥ सत्यसत्या ४ दिद्ये

५

चक्र विनिधाज्ञगनः तस्मिन् वयवजयग ॥ द्रुयस्य ध्वनं सद्ये सत्य लाकया क ॥ दि
 ध्वयं रुगयाडासास्यं विज्ञात ॥ थ ध्वं रुनया न स न ड ड मान या के निर्मलदृ
 ध्वं न यन संगानं आयुर्वृद्धि याद
 निधै विद्वानया स्व कनूसादृष्टिं न याडासास्यं विज्ञायमात्र ॥ ॥ सत्यसत्या ४ दिद्ये

सकलैरुकासद्याय॥ काहु १०८ कुडासः यानूः चिः चाकूः मिकूसिः दूगुडाः सवे
नहाः सलायहाः ग्वचः आकूतः गायः थानिद्यायइजा॥

६

दिगयगा दसचगा

य चित्त ज्ञा स्याम

द निर र चित्त

य खग

उ चित्त

अ प्रका

ने स्याम

वी प्रका

हं खग

2668

ASIA ARCHIVES

